कांचीपुरम का कैलाशनाथ मन्दिर: एक प्राचीन विश्वविद्यालय

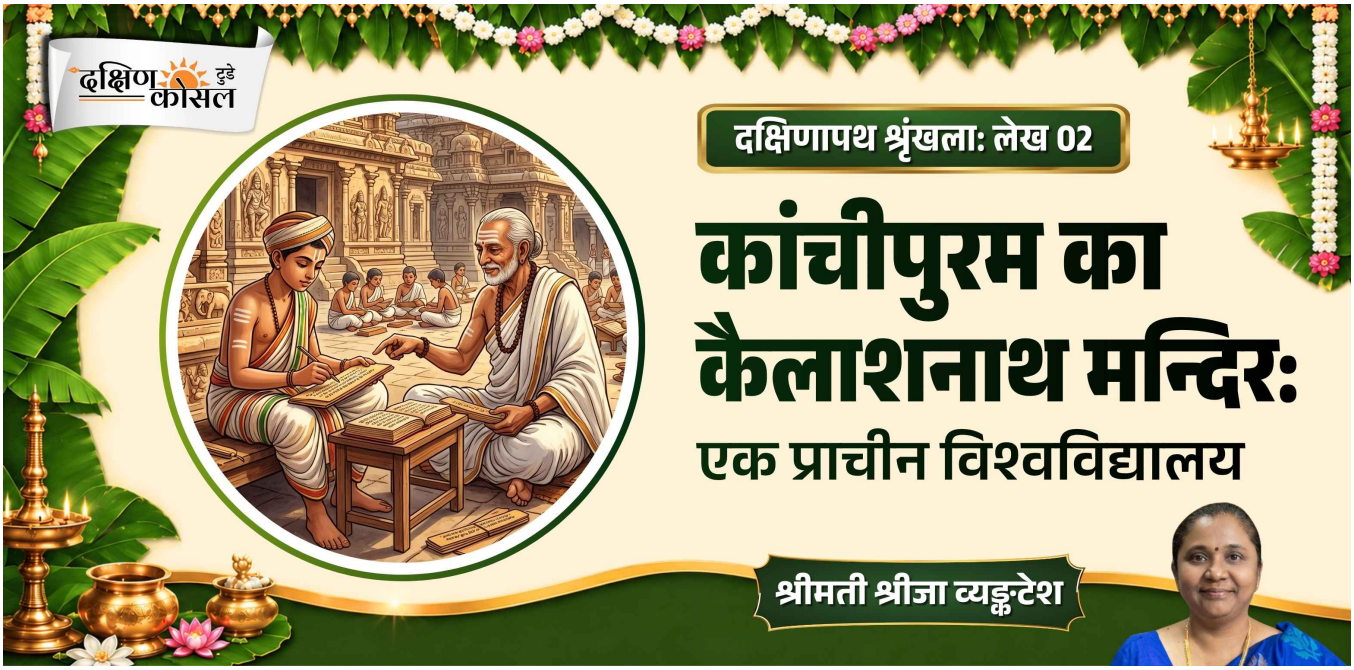

- लेखक : श्रीजा व्यङ्कटेश
- तारीख : May 31, 2026

यह लेख दक्षिण भारत के ऐतिहासिक कैलाशनाथ मन्दिर की शैक्षिक और सांस्कृतिक महत्ता पर गहराई से प्रकाश डालता है। जब विदेशी आक्रमणों और प्राकृतिक आपदाओं के कारण उत्तर भारत गम्भीर संकट में था तब दक्षिण के इन मन्दिरों ने सनातन ज्ञान विज्ञान को सहेजने का अभूतपूर्व कार्य किया। लेख में बताया गया है कि किस प्रकार इस मन्दिर ने देश भर के विद्यार्थियों को निःशुल्क और उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान की। यह लेख हमारे प्राचीन मन्दिरों के एक ऐसे उत्कृष्ट रूप को सामने लाता है जो आधुनिक विश्वविद्यालयों से भी अधिक सुव्यवस्थित और उन्नत था।

हमारा भारतवर्ष भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है, कहीं मैदानों है तो कहीं पर्वत-पठार, तो कहीं उफनती नदियां और तो कहीं विशाल मरुस्थल है। इसके बावजूद सनातन धर्म ही वह एक अदृश्य सूत्र है जो इस सम्पूर्ण भूभाग को एक सूत्र से जोड़कर रखता है। यदि हम अपने देश के दो सबसे महान महाकाव्यों रामायण और महाभारत का अवलोकन करें तो हम पाएँगे कि इन दोनों ही ग्रन्थों में पूरे भारतवर्ष की भागीदारी रही है। रामायण काल में दक्षिण के राजाओं ने सीता माता की खोज में भगवान श्रीराम की पूरी सहायता की थी।

दक्षिण के राजाओं द्वारा सीता जी की खोज में सहयोग

वहीं महाभारत के युद्ध में दक्षिण के पांड्य राजाओं ने पांडवों की विशाल सेना को भोजन कराने का महान दायित्व निभाया था। इन अकाट्य ऐतिहासिक प्रमाणों को आधार बनाकर हम उन प्राचीन मन्दिरों की ओर आगे बढ़ेंगे जिन्होंने वास्तव में प्राचीन काल में भारतवर्ष के लोगों को एकता के सूत्र में पिरोने का महान कार्य किया। ईसा पूर्व के समय में मगध के राजाओं ने पांड्य राजाओं के दरबार में अपने विशेष दूत भेजे थे। उनकी उपस्थिति का स्पष्ट उल्लेख प्रारम्भिक संगम साहित्य अहनानूरु में मिलता है।

भाषा कभी भी उनके बीच कोई बड़ी बाधा नहीं बनी क्योंकि वे लोग तमिल और संस्कृत दोनों ही भाषाओं का समान रूप से अध्ययन करते थे। 10वीं शताब्दी के आते आते अकाल समेत अन्य प्राकृतिक आपदाओं और गम्भीर राजनीतिक अस्थिरता के कारण उत्तर भारत को बहुत अधिक कष्टों का सामना करना पड़ा। ऐसे अत्यन्त कठिन समय में दक्षिण भारत ने सनातन धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए आगे आकर एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दक्षिण ने उस अथाह ज्ञान को पूरी तरह सुरक्षित किया जो हमारे महान ऋषियों और सिद्धों ने हमें पहले ही प्रदान किया था। दक्षिण भारतीय राजाओं ने अनेक विशाल मन्दिरों का निर्माण करवाया जो न केवल पूजा पाठ के केन्द्र थे अपितु उच्च स्तरीय शिक्षा के महान केन्द्र भी बने। ऐसा ही एक अत्यन्त प्राचीन और प्रमुख मन्दिर कांचीपुरम का कैलाशनाथर मन्दिर है।

कैलाशनाथ मंदिर- कांचीपुरम

कैलाशनाथर मन्दिर का आरम्भिक विकास 7वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ और धीरे धीरे इसका विस्तार होता चला गया। यह मन्दिर वहाँ पहले से ही विद्यमान था परन्तु पल्लव वंश के प्रतापी राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय ने इस मन्दिर का बहुत बड़े स्तर पर विस्तार किया। भगवान शिव को मुख्य देवता के रूप में स्थापित करते हुए उन्होंने इस मन्दिर को इस प्रकार बनवाया कि यह आधुनिक काल के बड़े विश्वविद्यालयों के समान ही प्रतीत होता था।

यह मन्दिर सभी के लिए खुला था परन्तु शिक्षा ग्रहण करने के लिए एक कड़ी शर्त रखी गई थी। पूरे भारतवर्ष से विद्यार्थी यहाँ भगवान के दर्शन और शिक्षा दोनों प्राप्त करने के लिए भारी संख्या में आते थे। उत्तर भारतीय राजाओं के राजकुमारों से लेकर एक अत्यन्त साधारण पृष्ठभूमि के विद्यार्थी तक सभी के प्रवेश के लिए समान रूप से योग्य माना जाता था

इस मन्दिरस्थ विश्वविद्यालय में कुल 14 प्रकार की विद्याओं का शिक्षण-प्रशिक्षण दिया जाता था। इनमें तर्कशास्त्र राजनीति विज्ञान चिकित्सा विज्ञान जिसके अन्तर्गत आयुर्वेद और सिद्ध दोनों शामिल थे तथा व्याकरण जैसे महत्त्वपूर्ण विषय शामिल थे। यहाँ तमिल और संस्कृत दोनों भाषाओं का व्याकरण पढ़ाया जाता था।

परन्तु इस महान शिक्षण संस्थान में प्रवेश पाना कोई सरल कार्य नहीं था। यहाँ प्रवेश पाने के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को विद्वानों के एक बोर्ड द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती थी। यह एक मौखिक और अत्यन्त कठोर व्यक्तिगत परीक्षा होती थी जिसमें विद्यार्थी की योग्यता और उसकी शिक्षा के प्रति सच्ची मंशा को बहुत गहराई से परखा जाता था।

विद्वानों के इस समूह में देश भर के प्रकांड विद्वान शामिल होते थे और वे कभी भी विद्यार्थी के सामाजिक पद या उसकी आर्थिक पृष्ठभूमि से प्रभावित नहीं होते थे। कैलाशनाथ मन्दिर न केवल प्रवेश देता था अपितु यह अपने सभी विद्यार्थियों को पूरी तरह से निःशुल्क भोजन और आवास की सुविधा भी प्रदान करता था। यदि कोई राजकुमार भी यहाँ प्रवेश प्राप्त करता था तो उससे भी उसकी पढ़ाई के लिए एक भी सिक्का नहीं लिया जाता था।

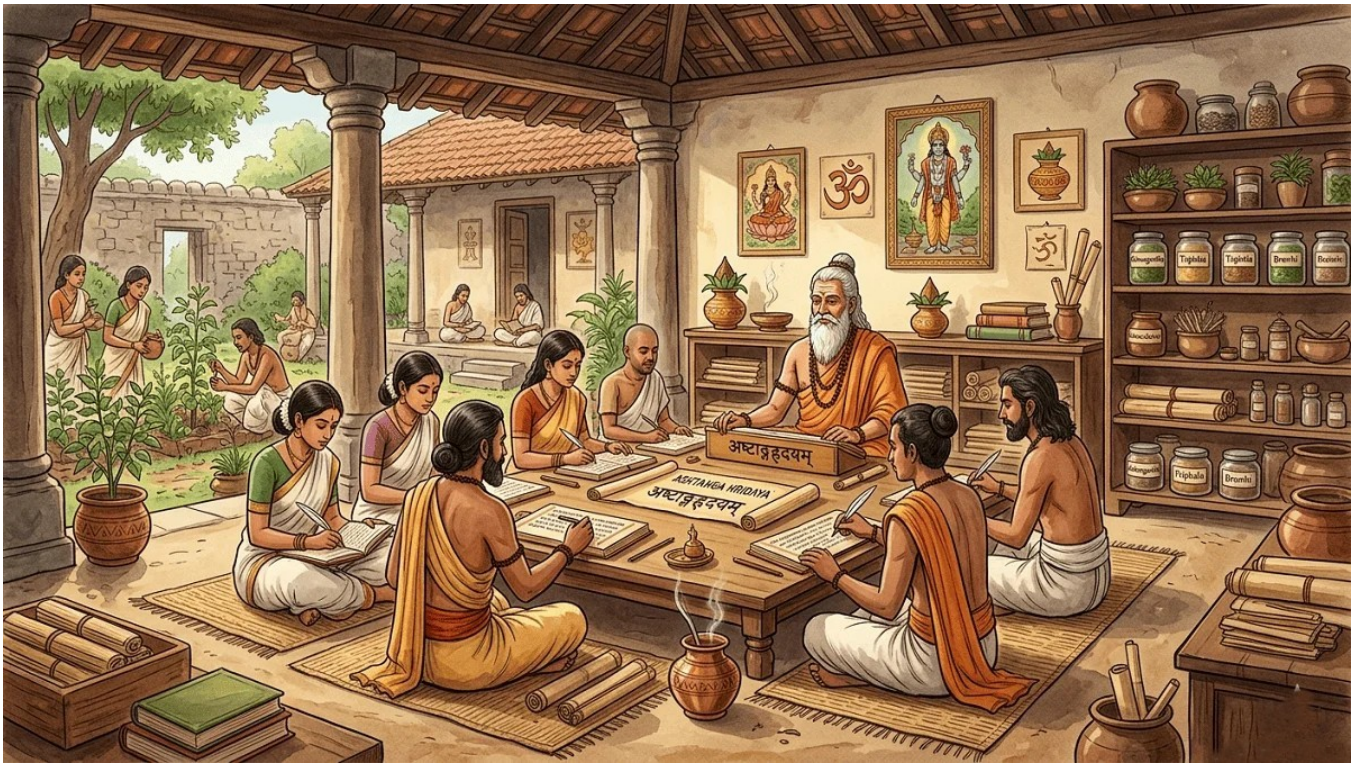

कैलाशनाथ मंदिर- प्राचीन भारत के प्रमुख शिक्षण संस्थान में से एक

महान राजाओं ने इस मन्दिर को विशाल खेतों और सोने के सिक्कों का उदारतापूर्वक दान देकर इसका निरन्तर संवर्धन किया। इन विश्वविद्यालयों के आचार्यों का वेतन भी इन्ही राजाओं द्वारा दिया जाता था। इस मन्दिर के लिपि ग्रन्थ में लिखे गए कई ऐसे शिलालेख आज भी मौजूद हैं जो उन दानवीर राजाओं और रानियों के बारे में विस्तार से बताते हैं। सभी विद्यार्थी अपने कर्तव्य के एक अनिवार्य भाग के रूप में मन्दिर में पूजा अर्चना और साफ सफाई की गतिविधियाँ स्वयं करते थे।

महिला विद्यार्थियों के लिए एक अलग खण्ड की व्यवस्था थी परन्तु उत्तर भारत के दुर्गम इलाकों से दक्षिण भारत तक यात्रा करना महिलाओं के लिए अत्यन्त कठिन था इसलिए यहाँ मुख्य रूप से केवल दक्षिण भारतीय महिलाएं ही शिक्षा ग्रहण करने जाती थी।

विश्वविद्यालय में अध्ययन करती महिलायें

मन्दिर में पुरुष और महिला दोनों ही प्राध्यापक विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते थे। महिला विद्यार्थियों के रहने का स्थान पुरुष विद्यार्थियों के स्थान से बिल्कुल अलग था। वे मन्दिर से दूर एक अलग इमारत में निवास करती थीं जिसकी सुरक्षा का पूरा जिम्मा राजा के सैनिकों के पास होता था। पुरुष और महिला विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम एक ही था किन्तु दोनों को अलग-अलग कक्षाओं में पढ़ाया जाता था।

शिक्षा के प्रसार के लिए किसी मन्दिर को ही क्यों चुना गया? इसके लिए तो नालंदा और अन्य विश्वविद्यालयों की भांति और संस्थान स्थापित किये जा सकते थे फिर मंदिर ही क्यों? 8वीं शताब्दी की शुरुआत में राजाओं और जनता के बीच जैन संप्रदाय और बौद्ध संप्रदाय बहुत तेजी से लोकप्रियता हासिल कर रहे थे। ऐसे में शैव और वैष्णव आदि संप्रदाय अपने अनुयायियों को बनाए रखने के लिए कड़ा संघर्ष कर रहे थे।

उत्तर में प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय

जैन संप्रदाय और बौद्ध संप्रदाय ने मुफ्त शिक्षा और मुफ्त चिकित्सा उपचार प्रदान करके लोगों को अपनी ओर बहुत आकर्षित किया। इसके साथ ही उन्होंने यह दावा भी किया कि उनके संप्रदाय में सभी मनुष्य एक समान हैं। इसी कारण से 7वीं और 8वीं शताब्दी के दौरान पूरे भारत में भारी पैमाने पर लोगों का इन संप्रदायों की स्वीकार्यता बढ़ी।

ऐसे में दक्षिण भारतीय राजाओं ने विभिन्न मन्दिरों में विश्वविद्यालयों की स्थापना की। यहाँ विद्यार्थियों को वेदों की शिक्षा दी जाती थी जिससे सम्पूर्ण भारतवर्ष में लोगों के बीच अपने धर्म के प्रति गहरी रुचि जाग्रत हुई।

यह स्थिति 10वीं शताब्दी तक बनी रही परन्तु तब तक उत्तर भारत में तुर्की इस्लामी आक्रमणकारियों ने अपना भयंकर प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया था। दक्षिण भारत को अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण आक्रमणकारियों से एक प्राकृतिक सुरक्षा प्राप्त थी।

भारत के इस भाग पर आक्रमण करने के लिए उन्हें विन्ध्याचल को पार करना पड़ता था जिसे पार करना दुर्जेय कार्य था क्योंकि यह रहस्यों और भयानक जंगली जानवरों से भरा एक विशाल क्षेत्र था। दूसरा मार्ग समुद्र के रास्ते से होकर जाता था परन्तु तमिल राजाओं के पहले से ही रोम, मेसोपोटामिया, यूनान और मिस्र के साथ बहुत मजबूत व्यापारिक सम्बन्ध थे। प्राकृतिक रूप से सुरक्षित होने के कारण दक्षिण क्षेत्र को सनातन धर्म के ज्ञान को गुप्त रूप से संरक्षित करने का अवसर मिला।

कौटिल्य अर्थशास्त्र की प्राचीन पांडुलिपि जो दक्षिण से प्राप्त हुई

मन्दिरों में चलने वाले इन विश्वविद्यालयों को घटिका स्थल कहा जाता था। घटिका शब्द संस्कृत के मूल शब्द घट से लिया गया है जिसका अर्थ एक घड़ा होता है। प्रतीकात्मक रूप से यह ज्ञान और विद्या का एक अत्यन्त प्रतिष्ठित घड़ा था। उत्तर भारत में कार्यरत नालंदा और अन्य बड़े विश्वविद्यालयों के पतन से सीख लेते हुए दक्षिण भारत के विद्वानों ने शक्ति का कोई एक केन्द्र बनने ही नहीं दिया।

ज्ञान की पुस्तकों और ताड़ के पत्तों को एक ही स्थान पर इकट्ठा नहीं किया गया बल्कि उन्हें 4 बार लिखकर अनेक विभिन्न मन्दिरों में फैला दिया गया। इस विकेन्द्रीकृत व्यवस्था का लाभ यह था कि यदि एक विश्वविद्यालय नष्ट हो जाता तो भी अन्य विश्वविद्यालय आसानी से जीवित रह सकते थे। इसी कारण ये मन्दिर शिक्षा केन्द्र 1000 से भी अधिक वर्षों तक सफलतापूर्वक काम करते रहे।

पाण्डुलिपि का संरक्षण करते आचार्यगण

उत्तरी प्रान्तों के अनेक विद्यार्थियों ने हमारे धर्म को गहराई से सीखा और अपनी जन्मभूमि में वापस लौटकर ज्ञान के बल पर सनातन धर्म की रक्षा की। कदम्ब वंश के संस्थापक मयूर शर्मा ऐसे ही एक महान विद्यार्थी थे। कन्नौज के राजाओं और राष्ट्रकूटों ने कांचीपुरम का दौरा किया और अपने राजकुमारों को मन्दिर विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी के रूप में नामांकित कराया। राजकुमारों को भी प्रवेश पाने के लिए मौखिक पूछताछ की कठोर प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था।

कैलाशनाथ मन्दिर का आकर्षण मुख्य गर्भगृह के नीचे स्थित एक रहस्यमयी सुरंग है। इस मन्दिर के गर्भगृह के बायीं ओर एक सुरंग है जिसमें व्यक्ति को उतरना पड़ता है। प्रारम्भ में वहाँ बहुत अधिक अन्धेरा प्रतीत होता है परन्तु कुछ समय बाद हमारी आँखें उस गहन अन्धेरे की अभ्यस्त हो जाती हैं। हम उस सुरंग के बीच तक सीधे खड़े हो सकते हैं भले ही कोई व्यक्ति 7 फीट का ही क्यों न हो।

एक निश्चित बिन्दु पर पहुँचने के बाद हमें धीरे धीरे नीचे की ओर झुकना पड़ता है और अन्ततः उस सुरंग से बाहर निकलने के लिए घुटनों के बल रेंगना पड़ता है। यह हमारे जन्म और जीवन से बाहर निकलने का एक गहरा प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है।

इस प्रकार हमारे महान पूर्वजों ने हमारे धर्म और हमारे अनमोल ज्ञान की रक्षा की। कैलाशनाथर मन्दिर के समान ही वैकुंठनाथ मन्दिर भी एक विशाल विश्वविद्यालय था। ऐसे अनेक मन्दिर विश्वविद्यालय 16वीं शताब्दी तक सफलतापूर्वक अस्तित्व में रहे जो हमारी महान सनातन परम्परा के मूक गवाह हैं।

- श्रीजा व्यङ्कटेश
(लेखिका प्रखर शिक्षाविद, विचारक एवं स्तंभकार हैं, जो अपनी विश्लेषणात्मक लेखनी से राष्ट्रहित व समसामयिक विषयों पर निरंतर वैचारिक योगदान करती हैं।)